

## दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 11-03-2025

### विषय सूची

प्राचीन पूर्वजों द्वारा औजारों का उपयोग

भारत में क्लिक कॉमर्स का उदय

कृषि ऋण: किसान क्रेडिट कार्ड बैड लोन में वृद्धि

जीन-संपादित केले

सुशासन के लिए अंतरिक्ष-तकनीक

**संक्षिप्त समाचार**

जदयास्वामी महोत्सव

बिजयानंद पटनायक

बिल ऑफ लैडिंग बिल, 2024

विझिंजम बंदरगाह

कसावा

भारत का गेहूँ उत्पादन रिकॉर्ड ऊँचाई पर पहुँचने की संभावना

भारतीय वैज्ञानिकों ने जालसाजी को विफल करने के लिए स्याही बनाई

चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्रों का डेटा प्रकट किया

SIPRI रिपोर्ट(2020-24)

पैरा-एथलेटिक्स ग्रेंड प्रिक्स

## प्राचीन पूर्वजों द्वारा औजारों का उपयोग

### संदर्भ

- नेचर में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, प्राचीन पूर्वज कम से कम 1.5 मिलियन वर्ष पहले हड्डी के औजारों का उपयोग कर रहे थे, जो कि पहले के अनुमान से लगभग 1 मिलियन वर्ष पहले था।

### परिचय

- सबसे पुराने ज्ञात पाषाण के औजार और भी पुराने हैं, जो 3.3 मिलियन वर्ष प्राचीन हैं।
  - ये तिथियाँ प्रागैतिहासिक औजारों पर आधारित हैं जो आज भी सुरक्षित हैं।
  - लकड़ी के उपयोग के सबसे पुराने साक्ष्य केवल 700,000 वर्ष पूर्व के हैं।
- ब्रिटिश पैलियोएन्थ्रोपोलॉजिस्ट केनेथ ओकले ने 1940 के दशक के उत्तरार्ध में औजारों के उपयोग और औजार बनाने को विशिष्ट मानवीय गुणों के रूप में पहचाना।
  - इसने सुझाव दिया कि औजार प्रौद्योगिकी एक विशिष्ट मानवीय गुण है।
- आज विशेषज्ञ सुझाव देते हैं कि बंदर जैसे पूर्वज अपने दैनिक जीवन में लाठी और पत्थरों का उपयोग कर रहे होंगे, जो कि सबसे पुराने औजारों से लाखों वर्ष पहले हो सकता है।
- इसका तात्पर्य है कि औजार प्रौद्योगिकी होमो जीनस के उद्भव से पूर्व की है, और यह एक विशिष्ट मानवीय गुण नहीं है।

### औजार निर्माण के अध्ययन की समयरेखा

- **चार्ल्स डार्विन (1871):** उन्होंने पाया कि चिम्पांजी पत्थरों से नट तोड़ने जैसे औजारों का प्रयोग करते थे।
- **जेन गुडॉल (1960):** उन्होंने चिम्पांजी को दीमक पकड़ने के लिए लाठी और पानी पीने के लिए पत्तियों जैसे औजारों का प्रयोग करते हुए देखकर डार्विन के काम को आगे बढ़ाया।
  - गुडॉल के निष्कर्षों के बावजूद, दशकों तक वैज्ञानिक औजार प्रौद्योगिकी के बारे में मानव-केंद्रित दृष्टिकोण रखते रहे।

- **औजारों का उपयोग और औजार बनाना:** प्रारंभ में माना जाता था कि चिम्पांजी और अन्य प्राइमेट औजारों का प्रयोग करते हैं तथा उन्हें संशोधित भी करते हैं।
- **हाल ही में किए गए शोध:**
  - चिम्पांजी को लकड़ी के भाले बनाते हुए देखा गया है।
  - कैपुचिन बंदर अनजाने में पत्थर के टुकड़े बनाते हैं जो शुरुआती मानव पूर्वजों द्वारा बनाए गए पत्थरों के समान होते हैं।

### पाषाण युग

- यह एक प्रागैतिहासिक काल है, जिसमें पत्थर के औजारों का प्रयोग किया जाता था, जिसे तीन प्रमुख अवधियों में विभाजित किया गया है: पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण।
- **पुरापाषाण युग:** इसे पुराने पाषाण युग के रूप में भी जाना जाता है।
  - लगभग 2.6 मिलियन वर्ष पहले प्रारंभ हुआ और लगभग 10,000 ईसा पूर्व तक चला।
  - मानव शिकारी-संग्राहक थे, जो शिकार, कसाई से संबंधित कार्य और खाद्य प्रसंस्करण के लिए पत्थर के औजारों का उपयोग करते थे।
- **मध्यपाषाण युग:** 10,000 ईसा पूर्व और 5,000 ईसा पूर्व के मध्य हुआ (क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग)।
  - विशेष उपकरण, पर्यावरण अनुकूलन और पौधों और जानवरों के शुरुआती पालतू बनाने की विशेषता।
- **नवपाषाण युग:** लगभग 12,000 वर्ष पहले प्रारंभ हुआ और 4500 ईसा पूर्व और 2000 ईसा पूर्व के बीच समाप्त हुआ।
  - कृषि, पशुपालन और बसे हुए समुदायों को अपनाने की विशेषता।
  - मिट्टी के बर्तन, बुनाई और जटिल सामाजिक संरचनाओं के विकास का नेतृत्व किया।
  - कृषि ने मानव समाज में क्रांति ला दी और सभ्यताओं का उदय हुआ।

Source: IE

## भारत में क्विक कॉमर्स का उदय

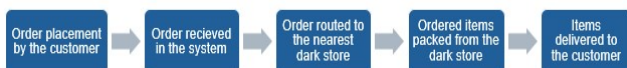
### संदर्भ

- भारत के खुदरा और दूरस्थ वितरण परिदृश्य को बदलने वाला क्विक कॉमर्स, देश के ई-कॉमर्स क्षेत्र में एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में सामने आया है।

### क्विक कॉमर्स क्या है?

- ई-कॉमर्स का एक उपवर्ग क्विक कॉमर्स, बहुत ही कम समय सीमा के अन्दर, सामान्यतः 10 से 20 मिनट में, मुख्य रूप से किराने का सामान और आवश्यक वस्तुओं की तेजी से डिलीवरी को संदर्भित करता है।
- यह मॉडल तेज और कुशल डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए हाइपरलोकल फुलफिलमेंट सेंटर, डार्क स्टोर और मजबूत आपूर्ति शृंखला प्रबंधन पर निर्भर करता है।
- भारतीय क्विक कॉमर्स बाजार का वर्तमान मूल्य \$3.34 बिलियन है और 2029 तक \$9.95 बिलियन तक पहुंचने की संभावना है।
  - वित्त वर्ष 2024 में उद्योग में वार्षिक आधार पर 76% की वृद्धि हुई।

Process flow of instant delivery platforms



### क्विक कॉमर्स बाजार के विकास चालक

- **उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव:** शहरी उपभोक्ता तत्काल संतुष्टि और सुविधा को प्राथमिकता देते हैं, जिससे क्विक कॉमर्स एक आकर्षक विकल्प बन जाता है।
- **इंटरनेट पैठ:** मोबाइल एप्लिकेशन और डिजिटल भुगतान प्रणालियों के व्यापक उपयोग ने क्यू-कॉमर्स को अपनाने में तेजी ला दी है।
- **तकनीकी उन्नति:** AI-संचालित इन्वेंट्री प्रबंधन, डेटा एनालिटिक्स और दूरस्थ क्षेत्रों में डिलीवरी अनुकूलन ने क्विक कॉमर्स को व्यवहार्य बना दिया है।
- **सस्ता कार्यबल:** कम लागत वाली जनशक्ति की उपलब्धता दक्षता को बढ़ाती है।

### क्विक कॉमर्स के लाभ

- **शहरी सुविधा:** क्विक कॉमर्स 10-30 मिनट के भीतर किराने का सामान, दवाइयाँ और व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों जैसी ज़रूरी चीज़ें डिलीवर करता है।
- **रोज़गार वृद्धि:** गिग इकॉनमी का विस्तार करता है, जिसके 2029-30 तक 23.5 मिलियन कर्मचारियों तक पहुंचने की संभावना है।
- **टेक और इनोवेशन:** AI-संचालित माँग पूर्वानुमान, रूट ऑप्टिमाइज़ेशन और माइक्रो-वेयरहाउसिंग मॉडल। ज़ेप्टो जैसी कंपनियाँ इन्वेंट्री को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने के लिए मशीन लर्निंग का उपयोग करती हैं।
- **टियर-2 और टियर-3 विस्तार:** ई-कॉमर्स की 60% वृद्धि छोटे शहरों से है।
- **आपातकालीन सहायता:** क्विक कॉमर्स आपातकालीन स्थितियों में सहायता करता है, दवाइयों, शिशु उत्पादों और आवश्यक वस्तुओं तक तेजी से पहुंच प्रदान करता है। उदाहरण के लिए: हाल ही में ब्लिंकित द्वारा लॉन्च की गई एम्बुलेंस।

### अनुकूल सरकारी पहल

- डिजिटल इंडिया ने भारत के डिजिटल बुनियादी ढाँचे को बदल दिया है, डिजिटल साक्षरता को बढ़ाया है और ई-सेवाओं को बढ़ावा दिया है।
- स्टार्ट-अप इंडिया ने नए जमाने के स्टार्ट-अप से नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया है।
- UPI और RuPay ने डिजिटल भुगतान को सरल बनाया है, जिससे बैंकिंग तक निर्बाध पहुंच मिलती है।
  - भारतनेट ने ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी का विस्तार किया है, जिससे वंचित क्षेत्रों में क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स को बढ़ावा मिला है।
- ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) ने छोटे विक्रेताओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाकर भारत के क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स पारिस्थितिकी तंत्र की पहुंच बढ़ाई है।



- विदेशी अभिकर्ताओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए B2B मॉडल में शामिल संस्थाओं में स्वचालित मार्ग के माध्यम से 100% FDI की अनुमति है।

### क्विक कॉमर्स से जुड़ी चिंताएँ

- गिग इकॉनमी के मुद्दे:** डिलीवरी अधिकारियों को रोजगार की असुरक्षा, लंबे समय तक काम करने और सामाजिक सुरक्षा लाभों की कमी का सामना करना पड़ता है।
- प्रतिस्पर्धी विरोधी व्यवहार:** प्रतिस्पर्धियों को खत्म करने के लिए लूटपाट वाली कीमतें और भारी छूट।
  - इन प्लेटफॉर्म के पास वेंचर कैपिटलिस्ट और/या प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के कारण बहुत अधिक पैसा है।
- डेटा शोषण:** उपयोगकर्ता डेटा, स्थान और खरीद व्यवहार के आधार पर अलग-अलग मूल्य निर्धारण।
- पारंपरिक खुदरा विक्रेताओं पर प्रभाव:** छोटे खुदरा विक्रेताओं को प्रतिस्पर्धा करने में संघर्ष करना पड़ता है, जिससे व्यवसाय बंद हो जाते हैं और वित्तीय हानि होती है।
- गुणवत्ता आश्वासन:** उत्पादों को जल्दी से जल्दी डिलीवर करने की हड़बड़ी में उत्पाद की गुणवत्ता, पैकेजिंग और सुरक्षा मानकों से समझौता हो जाता है।

### आगे की राह

- निष्पक्ष रोजगार प्रथाएँ:** कंपनियों को डिलीवरी कर्मियों के लिए बेहतर वेतन, बीमा और प्रोत्साहन प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- स्थानीय किराना स्टोर का एकीकरण:** स्थानीय खुदरा विक्रेताओं के साथ साझेदारी को मजबूत करने से व्यापक बाजार भागीदारी और आर्थिक समावेशिता सुनिश्चित हो सकती है।
- तकनीकी उन्नयन:** AI, ब्लॉकचेन और IoT का लाभ उठाने से गुणवत्ता और अनुपालन मानकों को बनाए रखते हुए दक्षता में वृद्धि हो सकती है।

### निष्कर्ष

- क्विक कॉमर्स बेजोड़ सुविधा के साथ भारत के ई-कॉमर्स को नया आकार दे रहा है।

- स्थायित्व, श्रम अधिकारों और पर्यावरण संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए एक संतुलित, अच्छी तरह से विनियमित दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिससे सभी हितधारकों के लिए दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित हो सके।

Source: TH

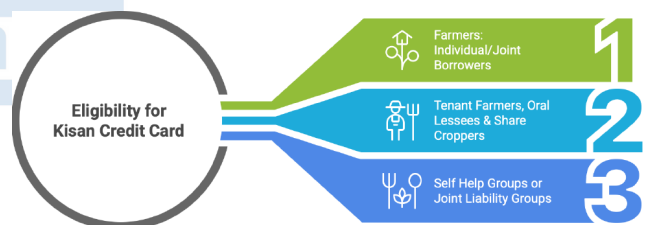
### कृषि ऋण: किसान क्रेडिट कार्ड बैड लोन में वृद्धि

#### संदर्भ

- हालिया आँकड़ों से पता चलता है कि किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना के अंतर्गत बैड लोन में पिछले चार वर्षों में 42% की वृद्धि हुई है, जो कृषि क्षेत्र में वित्तीय तनाव को प्रकट करता है।

### किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना को समझना (1998)

- परिचय:** इसे आर.वी.गुप्ता समिति की सिफारिशों के आधार पर, कृषि और संबद्ध गतिविधियों के लिए किसानों को अल्पकालिक ऋण उपलब्ध कराने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

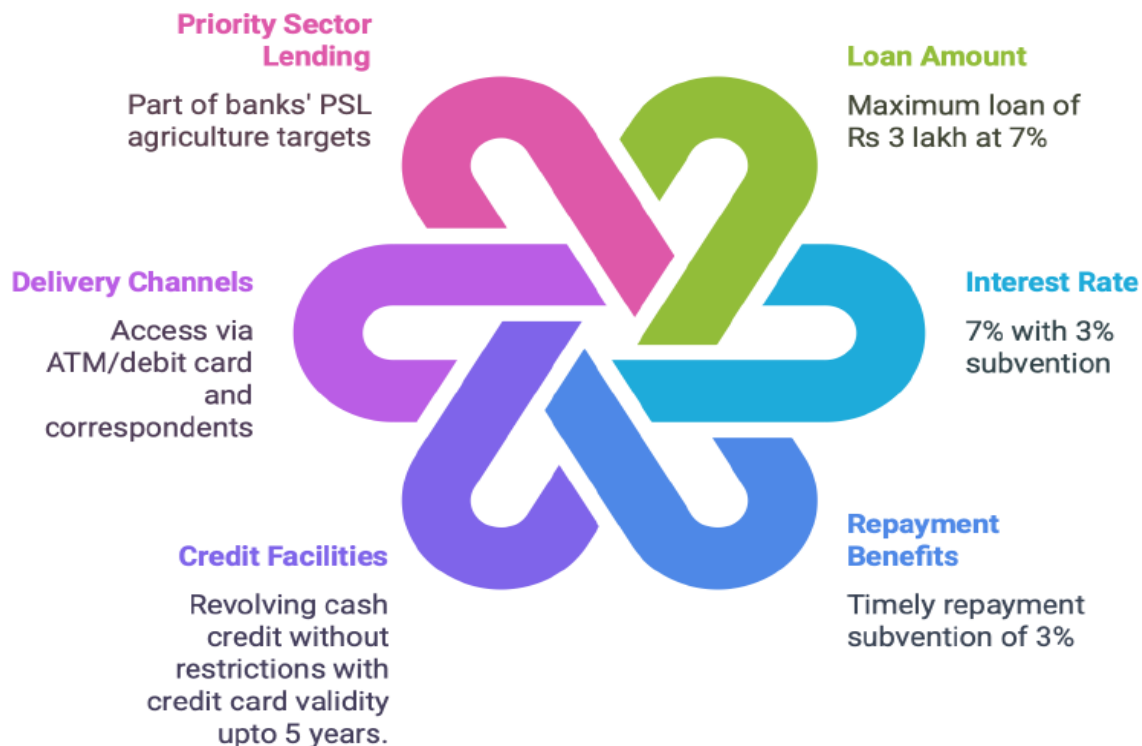


#### विशेषताएँ:

- वाणिज्यिक बैंकों, सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा जारी किया गया।
- फसल उत्पादन की ज़रूरतों (बीज, उर्वरक, कीटनाशक, आदि) को कवर करता है।
- डेयरी, मुर्गीपालन और मत्स्य पालन जैसी संबद्ध गतिविधियों के लिए कार्यशील पूँजी शामिल है।
- खेत मशीनरी, सिंचाई और कटाई के बाद के व्ययों के लिए उपयोग किया जा सकता है।
  - अगर वितरण के तीन वर्ष के भीतर भुगतान नहीं किया जाता है तो KCC ऋण को NPA के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

- KCC योजना का कार्य:

## Working of the Scheme



### गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPAs) के बारे में

- ये उन ऋणों या अग्रिमों को संदर्भित करते हैं जिनके मूलधन या ब्याज का भुगतान 90 दिनों से अधिक समय से बकाया है।

#### प्रकार

- सबस्टैण्डर्ड परिसंपत्तियाँ (Substandard Assets):** 12 महीने से कम या बराबर अवधि के लिए NPA
- संदिग्ध संपत्तियाँ (Doubtful Assets):** 12 माह से अधिक अवधि के लिए NPA
- हानि वाली संपत्तियाँ (Loss Assets):** बैंक या RBI द्वारा पहचाने गए अप्राप्य ऋण।

### कृषि ऋण (NPAs के रूप में) के लिए RBI दिशानिर्देश

- यदि दो फसल मौसमों के लिए भुगतान बकाया है तो अल्पकालिक फसल ऋण को NPAs माना जाता है।
- यदि एक फसल मौसम के लिए भुगतान बकाया है तो दीर्घकालिक कृषि ऋण NPAs बन जाता है।

### कृषि NPAs में वर्तमान प्रवृत्ति

#### KCC: REVOLVING CASH CREDIT FACILITY OFFERED TO FARMERS

Year	Number of operative accounts (crore)	Amount outstanding in operative accounts (₹ crore)	Amount outstanding in NPA accounts (₹ crore)
FY2021	3.07	4,56,736	68,547
FY2022	2.69	4,76,271	84,637
FY2023	2.83	5,18,485	90,832
FY2024	2.98	5,74,974	93,370
Q1 FY2025*	2.96	5,70,982	95,616
Q2 FY2025*	2.95	5,86,833	96,918
Q3 FY2025*	2.94	5,91,533	97,543

KCC data of Scheduled Commercial Banks (excluding Regional Rural Banks); \*Data are provisional

Source: RBI

- RBI के आँकड़ों के अनुसार, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर) के KCC खातों में बकाया NPA मार्च 2021 के अंत में ₹68,547 करोड़ से बढ़कर दिसंबर 2024 तक ₹97,543 करोड़ हो गया।
- इसमें किसानों के समक्ष ऋण चुकाने में आने वाली बढ़ती चुनौतियों को रेखांकित किया गया है।

### कृषि में बढ़ते NPAs के प्रमुख कारण

- **अप्रत्याशित मौसम और जलवायु परिवर्तन:** अनियमित वर्षा, बार-बार सूखा, बाढ़ और बदलते मौसम पैटर्न सीधे फसल की उपज को प्रभावित करते हैं, जिससे किसानों के लिए ऋण चुकाना मुश्किल हो जाता है।
  - सीमित बीमा कवरेज के साथ, फसल विफलता कृषि ऋण पर चूक की ओर ले जाती है।
- **कम कृषि आय और बाजार में अस्थिरता:** सरकारी सहायता के बावजूद, किसान प्रायः कम उत्पादकता और अलाभकारी कीमतों का सामना करते हैं।
  - बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव, सभी फसलों के लिए सुनिश्चित MSP की कमी और अपर्याप्त खरीद तंत्र वित्तीय संकट में योगदान करते हैं।
- **ऋण माफी योजनाएँ और नैतिक जोखिम:** राज्य और केंद्र सरकारें प्रायः राहत उपाय के रूप में ऋण माफी की घोषणा करती हैं, जिससे जानबूझकर चूक को बढ़ावा मिलता है।
  - किसान प्रायः भविष्य में छूट की उम्मीद करते हैं, जिससे खराब पुनर्भुगतान अनुशासन होता है।
- **बैंकों द्वारा अपर्याप्त जोखिम प्रबंधन:** बैंक बिना किसी ठोस जोखिम मूल्यांकन के ऋण स्वीकृत कर रहे हैं।
- **कृषि वित्त में संरचनात्मक कमजोरी:** छोटे और सीमांत किसान, जो भारत के कृषक समुदाय का 86% हिस्सा हैं, के पास संस्थागत ऋण तक सीमित पहुँच है।
  - अनौपचारिक साहूकारों पर निर्भरता के कारण किसान कर्ज के जाल में फँस जाते हैं और औपचारिक ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाते हैं।
- **फसल बीमा निपटान में देरी:** प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) को दावा निपटान में देरी का सामना करना पड़ रहा है, जिससे किसान ऋण चुकाने में असमर्थ हो गए हैं।

### बढ़ते कृषि NPA के निहितार्थ

- **बैंकिंग प्रणाली पर दबाव:** उच्च NPA बैंकों की नए ऋण देने की क्षमता को कम करता है, जिससे समग्र कृषि ऋण वृद्धि प्रभावित होती है।
  - RBI और सहकारी बैंक, जो मुख्य रूप से किसानों को सेवा प्रदान करते हैं, वित्तीय अस्थिरता से ग्रस्त हैं।
- **राजकोषीय भार में वृद्धि:** सरकार प्रायः ऋण माफी के लिए बैंकों को मुआवजा देती है, जिससे राजकोषीय संसाधनों पर दबाव पड़ता है और उत्पादक ग्रामीण निवेशों से धन हटा दिया जाता है।
- **आर्थिक और सामाजिक संकट:** ऋणग्रस्तता किसानों की आत्महत्याओं के पीछे एक प्रमुख कारण है, विशेषकर महाराष्ट्र, कर्नाटक और पंजाब जैसे राज्यों में।
  - बढ़ते NPA ग्रामीण संकट को जन्म देते हैं, जिससे रोजगार और खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती है।
- **वास्तविक किसानों के लिए ऋण संकट:** उच्च डिफॉल्ट दरों के कारण, बैंक ऋण मानदंडों को कठोर कर देते हैं, जिससे वास्तविक, ऋण योग्य किसानों के लिए ऋण प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है।

### बढ़ते कृषि NPA से निपटने के उपाय

- **फसल बीमा और जोखिम न्यूनीकरण को मजबूत करना:** PMFBY के अंतर्गत दावों का तेजी से निपटान और बीमा कवरेज का विस्तार वित्तीय संकट को कम कर सकता है।
  - जलवायु-अनुकूल खेती और फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने से मौसम संबंधी जोखिम कम हो सकते हैं।
- **ऋण अनुशासन में सुधार:** वास्तविक रूप से संकटग्रस्त किसानों तक ऋण माफी को सीमित करना और लक्षित राहत सुनिश्चित करना जानबूझकर चूक को रोक सकता है।

- समय पर पुनर्भुगतान प्रोत्साहन, जैसे ब्याज दर छूट, को प्रोत्साहित करके पुनर्भुगतान व्यवहार में सुधार किया जा सकता है।
- **संस्थागत ऋण पहुँच को बढ़ाना:** सभी छोटे और सीमांत किसानों के लिए किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) कवरेज का विस्तार करना।
  - बेहतर ऋण पहुँच के लिए सामूहिक सौदेबाजी सुनिश्चित करने के लिए किसान उत्पादक संगठनों (FPO) को मजबूत करना।
  - बैंकों की वेबसाइटों और कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन।
  - आसान सत्यापन के लिए PM-किसान और आधार के साथ एकीकरण।
- **बैंक पर्यवेक्षण और ऋण निगरानी को मजबूत करना:** संकट के शुरुआती संकेतों की पहचान करने के लिए प्रौद्योगिकी-संचालित ऋण ट्रेकिंग को लागू करना।
  - ऋण प्रबंधन और जोखिम न्यूनीकरण पर किसानों को शिक्षित करने के लिए वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों को बढ़ाना।
- **विविधीकरण और मूल्य-संवर्धन को प्रोत्साहित करना:** पारंपरिक कृषि आय पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए कृषि व्यवसाय, खाद्य प्रसंस्करण और गैर-कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देना।
  - फसल कटाई के बाद होने वाली हानि को कम करने के लिए आपूर्ति शृंखलाओं और भंडारण बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना।

Source: IE

## जीन-संपादित केले

### समाचार में

- हाल ही में, ब्रिटेन स्थित एक बायोटेक कंपनी ने आनुवंशिक रूप से इंजीनियर केले विकसित किए हैं, जिनकी शेल्फ लाइफ अधिक है और वे अधिक भूरे नहीं होते।

### केले का पकना

- केले एथिलीन नामक हॉर्मोन के कारण पकने की प्रक्रिया से गुजरते हैं, जो कि वे बड़ी मात्रा में बनाते हैं।
- एथिलीन उन जीन को सक्रिय करता है जो पॉलीफेनोल ऑक्सीडेज (PPO) का उत्पादन करते हैं, यह एक एंजाइम है जो केले में पीले रंग के रंगद्रव्य को तोड़कर भूरापन उत्पन्न करता है।
- चोट लगने से एथिलीन का उत्पादन बढ़ता है, जिससे पकने और भूरापन बढ़ने की प्रक्रिया तेज हो जाती है।

### नवीनतम घटनाक्रम

- वैज्ञानिकों ने केले को आनुवंशिक रूप से संशोधित किया है, जिससे PPO उत्पन्न करने वाले जीन को शांत किया जा सके, जिससे केले का रंग भूरा होने से बच जाता है।
- यह आनुवंशिक संशोधन पकने को नहीं रोकता है, लेकिन फल को लंबे समय तक ताजा बनाए रखता है।
- आर्कटिक सेब में भी इसी तरह की तकनीक का उपयोग किया गया था, जिसे 2017 से व्यावसायिक रूप से बेचा जा रहा है।

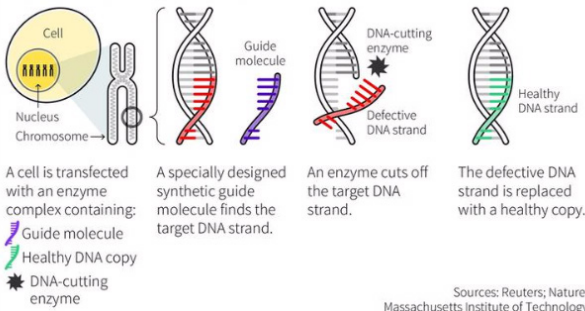
### जीन संपादन क्या है?

- यह एक ऐसी विधि है जो वैज्ञानिकों को विभिन्न जीवों (पौधे, बैक्टीरिया, जानवर) के DNA को संशोधित करने की अनुमति देती है।
- इससे शारीरिक लक्षणों (जैसे, आँखों का रंग) और बीमारी के जोखिम में बदलाव होता है।
- प्रारंभिक जीनोम संपादन तकनीकें 1900 के दशक के अंत में विकसित की गई थीं।
- 2009 में आविष्कार किए गए CRISPR टूल ने जीनोम संपादन को सरल, तेज, सस्ता और अधिक सटीक बनाकर क्रांति ला दी।
- CRISPR अब अपनी दक्षता और सटीकता के कारण जीनोम संपादन के लिए वैज्ञानिकों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

## DNA editing

A DNA editing technique, called CRISPR/Cas9, works like a biological version of a word-processing programme's "find and replace" function.

### HOW THE TECHNIQUE WORKS



## जीन संपादन में नवीनतम प्रवृत्ति

- **CRISPR प्रौद्योगिकी उन्नति:** यद्यपि CRISPR-Cas9 एक आधारशिला बना हुआ है, अन्य Cas एंजाइमों (जैसे Cas12 और Cas13) और वैकल्पिक CRISPR प्रणालियों का पता लगाने के लिए अनुसंधान का विस्तार हो रहा है।
- **सुधारित वितरण विधियाँ:** शोधकर्ता अधिक कुशल और लक्षित वितरण प्रणाली विकसित कर रहे हैं, जिसमें वायरल वेक्टर, लिपिड नैनोकण और अन्य नवीन दृष्टिकोण शामिल हैं।
- **आनुवंशिक रोगों के लिए जीन थेरेपी:** जीन संपादन सिकल सेल रोग, सिस्टिक फाइब्रोसिस और हंटिंगटन रोग जैसे वंशानुगत विकारों के इलाज के लिए आशाजनक परिणाम दिखा रहा है।
- **फसल सुधार:** जीन संपादन का उपयोग उन्नत गुणों वाली फसलों को विकसित करने के लिए किया जा रहा है, जैसे कि बड़ी हुई उपज, बेहतर पोषण मूल्य और कीटों और रोगों के प्रति प्रतिरोध।

## भारत में विनियमन

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अंतर्गत जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (GEAC) जीन-संपादन अनुमोदन की देखरेख करती है।
- भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) आनुवंशिक रूप से संशोधित (GM) खाद्य उत्पादों को नियंत्रित करता है।

## भारत में वर्तमान स्थिति

- भारत ने GM सरसों हाइब्रिड DMH-11 को इसके बीज उत्पादन और परीक्षण के लिए मंजूरी दे दी है, लेकिन अभी तक CRISPR-आधारित फसलों को मंजूरी नहीं दी है।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) फसलों में जलवायु लचीलापन और कीट प्रतिरोध को बढ़ाने के उद्देश्य से जीन-संपादन अनुसंधान की खोज कर रही है।

Source :IE

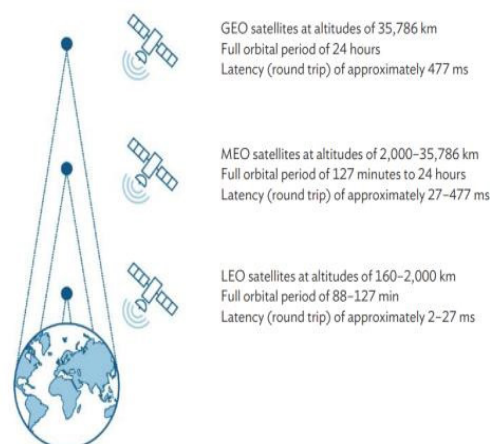
## सुशासन के लिए अंतरिक्ष-तकनीक

### संदर्भ

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने “सुशासन” सम्मेलन में कहा कि भारत की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी शासन में क्रांति लाने में प्रमुख भूमिका निभा रही है।

### अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी क्या है?

- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी बाह्य अंतरिक्ष में की जाने वाली गतिविधियों को सक्षम करने के लिए उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकियों को नामित करती है:
  - जैसे कि पृथ्वी अवलोकन, उपग्रह संचार, उपग्रह नेविगेशन या यहाँ तक कि पृथ्वी की कक्षाओं से परे रोबोट और मानव अंतरिक्ष अन्वेषण।
- सरकारें विकासात्मक गतिविधियों की योजना बनाने, निगरानी करने और मूल्यांकन करने के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, भू-स्थानिक डेटा और क्षेत्र की जानकारी का उपयोग करती हैं।





### भविष्य की संभावनाएँ और आर्थिक विकास

- **विकास:** भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था तेज़ी से बढ़ रही है, अंतरिक्ष बजट तीन गुना बढ़ गया है और 300 से अधिक अंतरिक्ष स्टार्टअप हैं।
  - अंतरिक्ष क्षेत्र का मूल्य 8 बिलियन डॉलर से बढ़कर 44 बिलियन डॉलर होने की उम्मीद है, जिससे भारत एक प्रमुख वैश्विक अंतरिक्ष अभिकर्ता बन जाएगा।
- **महत्वपूर्ण मिशन:** भारत के पहले मानव अंतरिक्ष यान, गगनयान मिशन के लिए परीक्षण 2025 के अंत तक प्रारंभ हो जाएंगे।
  - भारत का लक्ष्य 2040 तक चंद्रमा पर एक अंतरिक्ष यात्री भेजना और 2035 तक भारत अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना है।

### शासन में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग

- **आपदा प्रबंधन और प्रतिक्रिया:** राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (NRSC) उपग्रह डेटा प्रदान करता है जो बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की पहचान करने, क्षति का मानचित्रण करने और पुनर्वास की योजना बनाने में सहायता करता है।
  - भारतीय राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) आपदा राहत कार्यों के लिए इसका उपयोग करता है।
- **कृषि और ग्रामीण विकास:** FASAL (अंतरिक्ष, कृषि मौसम विज्ञान और भूमि-आधारित अवलोकनों का उपयोग करके कृषि उत्पादन का पूर्वानुमान) फसल की उपज की भविष्यवाणी करने के लिए उपग्रह डेटा का उपयोग करता है, जिससे किसानों को सूचित निर्णय लेने में सहायता मिलती है।
  - मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और सिंचाई प्रबंधन को रिमोट सेंसिंग तकनीकों का उपयोग करके अनुकूलित किया जाता है।
- **कुशल भूमि प्रबंधन:** “स्वामित्व योजना” जैसी पहल भूमि रिकॉर्ड प्रबंधन के लिए उपग्रह मानचित्रण का उपयोग करती है।

- यह पहल भूमि सत्यापन को सरल बनाती है और भूमि स्वामित्व में पारदर्शिता को बढ़ावा देती है।
- **पर्यावरण निगरानी:** ISRO द्वारा विकसित एक भारतीय वेब-आधारित एप्लिकेशन भुवन विभिन्न पर्यावरणीय और भूमि-उपयोग अनुप्रयोगों के लिए उपग्रह डेटा प्रदान करता है।
  - ओशनसैट शृंखला जैसे उपग्रह समुद्र की सतह के तापमान, समुद्र के स्तर में वृद्धि और तटीय कटाव पर डेटा प्रदान करते हैं।
- **सुरक्षा और रक्षा:** उपग्रह सीमा निगरानी के लिए रिमोट सेंसिंग में सहायता करते हैं।
- **प्रशासनिक दक्षता:** सैटेलाइट डेटा ई-गवर्नेंस सेवाओं तक पहुँच को सक्षम करके डिजिटल इंडिया पहल के कार्यान्वयन में मदद करता है।

### चुनौतियाँ

- **उच्च लागत:** उपग्रहों का विकास, रखरखाव और प्रक्षेपण महंगा है।
- **तकनीकी और बुनियादी ढाँचे की कमी:** दूरदराज के क्षेत्रों में पर्याप्त जमीनी बुनियादी ढाँचे, तकनीकी विशेषज्ञता और प्रशिक्षित कर्मियों की कमी।
- **डेटा व्याख्या और सटीकता:** अंतरिक्ष-आधारित डेटा को सटीक व्याख्या एवं विश्लेषण की आवश्यकता होती है, और डेटा प्रसंस्करण में त्रुटियों से शासन में गलत निर्णय हो सकते हैं।
- **गोपनीयता की चिंताएँ:** अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के माध्यम से निगरानी और निगरानी में वृद्धि नागरिकों के बीच गोपनीयता एवं सुरक्षा संबंधी चिंताएँ बढ़ाती है।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** अंतरिक्ष मिशन और उपग्रह प्रक्षेपण में वृद्धि अंतरिक्ष मलबे और पर्यावरण प्रदूषण में योगदान कर सकती है।

### आगे की राह

- अंतरिक्ष आधारित सेवाओं को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए आधारभूत बुनियादी ढाँचे, डेटा केंद्रों और संचार प्रणालियों का विकास और उन्नयन करें।

- लागत कम करने, नवाचार को बढ़ावा देने और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग में सुधार करने के लिए सरकार एवं निजी क्षेत्र के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करें।
- बेहतर कवरेज के लिए उपग्रहों की संख्या और विविधता बढ़ाएँ, विशेषतः देश के दूरदराज और कम सेवा वाले क्षेत्रों में।
- जलवायु परिवर्तन एवं शहरी नियोजन सहित उभरती शासन चुनौतियों का समाधान करने के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और इसके अनुप्रयोगों में अनुसंधान को प्रोत्साहित करें।
- पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने और अंतरिक्ष मलबे को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए उपग्रह प्रक्षेपण एवं अंतरिक्ष मिशनों के लिए स्थायी प्रथाओं को अपनाएँ।

Source: PIB

## संक्षिप्त समाचार

### जदयास्वामी महोत्सव

#### समाचार में

- हाल ही में तमिलनाडु में जदयास्वामी उत्सव मनाया गया।

#### परिचय

- नीलगिरि के बडगा समुदाय (आदिवासी जनजातियाँ) तमिलनाडु के कोटागिरी के पास जैकनाराय गाँव में जदयास्वामी उत्सव मनाते हैं।
  - बडगा लोग “हट्टी” नामक गाँवों में रहते हैं।
- बडगा लोग “बडुगु” नामक भाषा बोलते हैं।
- यह त्यौहार जदयास्वामी को समर्पित है, जो बडगा लोगों द्वारा पूजे जाने वाले देवता हैं।
- यह आस्था, भक्ति और पैतृक परंपराओं के संरक्षण का प्रतीक है।
- आठ गाँव प्रत्येक वर्ष जदयास्वामी मंदिर तक जुलूस निकालते हैं और अग्नि यात्रा करते हैं।

Source: TH

### बिजयानंद पटनायक

#### समाचार में

- प्रधानमंत्री ने बीजू पटनायक को उनकी 109वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

#### बीजू पटनायक के बारे में

- उन्हें आधुनिक ओडिशा के प्रमुख वास्तुकारों में से एक माना जाता है और उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन, विमानन एवं शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों को ब्रिटिश सेना से बचने और गुप्त संदेशों को ले जाने में सहायता करने के लिए अपने उड़ान कौशल का उपयोग किया।
- उन्होंने कलिंग फाउंडेशन की स्थापना की और वैज्ञानिक ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए कलिंग पुरस्कार की स्थापना की।
- बिजू पटनायक को इंडोनेशिया द्वारा “धरती पुत्र” की उपाधि से सम्मानित किया गया था - जो किसी विदेशी को दिए जाने वाले सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक है।
- 1996 में इंडोनेशिया के सर्वोच्च नागरिक सम्मान बंटांग जसा उत्तमा से सम्मानित किया गया।

Source: PIB

### बिल ऑफ लैडिंग बिल, 2024

#### संदर्भ

- केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री ने बिल ऑफ लैडिंग विधेयक, 2025 पेश किया।

#### परिचय

- **उद्देश्य:** शिपिंग दस्तावेजों के लिए कानूनी ढाँचे को अद्यतन और सरल बनाना।
  - समुद्री शिपिंग के लिए एक आधुनिक, व्यापक और उपयोगकर्ता के अनुकूल दृष्टिकोण प्रदान करना।
- यह विधेयक भारतीय बिल ऑफ लैडिंग एक्ट, 1856 का स्थान लेता है, जो समुद्री शिपिंग को नियंत्रित करने वाला औपनिवेशिक युग का कानून है।
- वर्तमान कानून पुराना हो चुका है, जिसमें केवल तीन खंड हैं, और यह वैश्विक व्यापार और शिपिंग उद्योग की उभरती जरूरतों को पूरा नहीं करता है।

• विशेषताएँ:

- यह भारत के समुद्री शिपिंग कानून को वैश्विक मानकों के अनुरूप लाता है।
- यह भाषा को सरल बनाता है और उनके सार को बदले बिना आसान समझ के लिए प्रावधानों को पुनर्गठित करता है।
- यह केंद्र सरकार को कानून के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए निर्देश जारी करने का अधिकार देता है।
- सुचारू संक्रमण को सुविधाजनक बनाने के लिए एक मानक निरसन और बचत खंड जोड़ा जाएगा।

Source: BS

## विज्ञान बंदरगाह

### समाचार में

- विज्ञानजाम अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह को चरण II और III के विकास के लिए पर्यावरणीय मंजूरी मिल गई है।

### विज्ञानजाम बंदरगाह के बारे में

- **स्थान:** तिरुवनंतपुरम, केरल
- **मुख्य विशेषताएँ:** भारत के सबसे गहरे बंदरगाहों में से एक।
  - अल्ट्रा लार्ज कंटेनर वेसल्स (ULCV) को संभालने में सक्षम।
  - डिजाइन, बिल्ड, फाइनेंस, ऑपरेट और ट्रांसफर (DBFOT) मॉडल के तहत विकसित।
- **महत्व:** कुशल कार्गो मूवमेंट, ट्रांसशिपमेंट के लिए कोलंबो (श्रीलंका), सिंगापुर एवं यूएई जैसे विदेशी बंदरगाहों पर भारत की निर्भरता को कम करता है, भारत की समुद्री सुरक्षा को मजबूत करता है।

Source: BL

## कसावा

### संदर्भ

- अध्ययन से पता चला है कि हजारों वर्षों की देशी कृषि परंपराओं ने कसावा की आनुवंशिक विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

### कसावा के बारे में (जिसे 'उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की रोटी' भी कहा जाता है)

- 'युका' या 'मैनिओक' के नाम से भी जाना जाने वाला कसावा एक जड़ वाली सब्जी है जिसे तने की कटिंग के माध्यम से उगाया जाता है।
- यह दक्षिण अमेरिका का एक लंबा अर्ध-लकड़ी वाला बारहमासी झाड़ी या पेड़ है और पुर्तगाली नाविकों द्वारा अफ्रीका और एशिया में लाया गया था।
  - नाइजीरिया कसावा का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक है।
- इसमें कई स्वास्थ्य लाभ हैं क्योंकि यह ऊर्जा और विटामिन से भरपूर है।
- भारत की राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति (2018) के तहत, कसावा को इथेनॉल उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में मान्यता दी गई है, जो खाद्य सुरक्षा से परे इसके महत्व को बढ़ाता है।

Source: DTE

## भारत का गेहूँ उत्पादन रिकॉर्ड ऊँचाई पर पहुँचने की संभावना

### संदर्भ

- कृषि उत्पादन के दूसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार, भारत का गेहूँ उत्पादन 2024-25 के दौरान 115.3 मिलियन मीट्रिक टन के रिकॉर्ड स्तर तक पहुँचने की संभावना है।

### भारत में गेहूँ उत्पादन

- **क्षेत्रफल:** 2023-24 में गेहूँ का क्षेत्रफल 318.33 लाख हेक्टेयर था, जबकि उत्पादन 113.92 मिलियन टन होने का अनुमान है।
- भारत में क्षेत्रफल के मामले में धान के बाद गेहूँ दूसरी सबसे बड़ी फसल है।
- उत्तर प्रदेश देश में सबसे अधिक गेहूँ उत्पादन करने वाला राज्य है, जिसके बाद मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, गुजरात और महाराष्ट्र का स्थान आता है।
- **प्रमुख निर्यात गंतव्य (2023-24):** नेपाल, इराक, दक्षिण कोरिया, यूएई और मंगोलिया।

## Top Producing Countries

Market	% of Global Production	Total Production (2024/2025, Metric Tons)
<a href="#">China</a>	18%	140.1 Million
<a href="#">European Union</a>	15%	121.3 Million
<a href="#">India</a>	14%	113.29 Million
<a href="#">Russia</a>	10%	81.5 Million
<a href="#">United States</a>	7%	53.65 Million

### गेहूँ की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ

- **जलवायु: तापमान:** बुआई (अंकुरण) के दौरान 10-15 डिग्री सेल्सियस और पकने एवं कटाई के दौरान 21-26 डिग्री सेल्सियस की आवश्यकता होती है।
  - **वर्षा:** इष्टतम वर्षा 50-100 सेमी है। अधिक वर्षा से फसल को हानि हो सकती है।
  - **सूर्य का प्रकाश:** पकने की अवधि के दौरान तेज धूप की आवश्यकता होती है।
  - **ठंड और ओलावृष्टि:** फूल आने के चरण में पाले के प्रति संवेदनशील और ओलावृष्टि से नुकसान के लिए अतिसंवेदनशील।
- **मृदा का प्रकार:** अच्छी जल निकासी वाली दोमट और चिकनी मृदा में सबसे अच्छा बढ़ता है।
  - **Ph स्तर:** थोड़ा क्षारीय से तटस्थ मिट्टी (6-8 Ph) को प्राथमिकता देता है।

### भारत में गेहूँ उत्पादन में वृद्धि के कारण

- **वैज्ञानिक कृषि पद्धतियाँ:** गेहूँ उगाने वाले क्षेत्रों, विशेष रूप से पंजाब और हरियाणा में, शून्य जुताई को अपनाना, जिससे मृदा का क्षरण कम हो और उपज बढ़े।
- **मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन:** मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना जैसी पहलों के माध्यम से संतुलित उर्वरक अनुप्रयोग के बारे में जागरूकता बढ़ी।
- **सिंचाई सुविधाएँ:** PMKSY (प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना) जैसी सूक्ष्म सिंचाई योजनाओं के तहत अधिक कवरेज ने जल की उपलब्धता में सुधार किया है।

- महत्वपूर्ण विकास चरणों के दौरान बेमौसम बारिश और हीटवेव जैसी चरम मौसम की घटनाओं की अनुपस्थिति।

Source: IE

## भारतीय वैज्ञानिकों ने जालसाजी को विफल करने के लिए स्याही बनाई

### संदर्भ

- नैनो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने स्ट्रोंटियम बिस्मथ फ्लोराइड (Sr<sub>2</sub>BiF<sub>7</sub>) नैनोकणों का उपयोग करके एक नई सुरक्षा स्याही बनाई है।

### परिचय

- जालसाजी एक ऐसा अपराध है जिसमें किसी के ट्रेडमार्क की चोरी की जाती है।
- छोटे और बड़े दोनों तरह के व्यवसाय उपभोक्ताओं को अपने उत्पादों की पहचान करने में सहायता करने के लिए ट्रेडमार्क का उपयोग करते हैं।
- **जालसाजी का खतरा:** जालसाजी व्यवसायों को हानि पहुँचाती है, विशेषतः फार्मास्यूटिकल्स और ब्रांडेड उपभोक्ता वस्तुओं जैसे क्षेत्रों में।
  - नकली दवाएँ उपचार में देरी कर सकती हैं या जानलेवा हो सकती हैं, जिससे पैकेजिंग में सुरक्षा मुद्रण महत्वपूर्ण हो जाता है।
- **सुरक्षा मुद्रण सुविधाएँ:** जालसाजी के विरुद्ध सुरक्षा उपायों के साथ वस्तुओं की छपाई को सुरक्षा मुद्रण कहा जाता है।
  - **ऑप्टिकली वैरिएबल इंक:** अलग-अलग कोणों से देखने पर रंग बदलता है।
  - **वॉटरमार्क:** प्रामाणिकता के लिए एम्बेडेड डिज़ाइन।
  - **होलोग्राम:** अतिरिक्त सुरक्षा के लिए त्रि-आयामी छवियाँ।
- वर्तमान में उपलब्ध फ्लोरोसेंट स्याही केवल पराबैंगनी प्रकाश या अवरक्त प्रकाश के अंतर्गत दिखाई देती है, लेकिन दोनों में नहीं, नई स्याही अलग दिखती है क्योंकि यह स्पेक्ट्रम के पराबैंगनी और निकट-अवरक्त दोनों भागों में फ्लोरोसेंट होती है।

Source: TH



## चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्रों का डेटा प्रकट किया

### संदर्भ

- चंद्रयान-3 पर चंद्रा के सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सपेरीमेंट (ChaSTE) से प्राप्त आँकड़ों के नए विश्लेषण से पता चलता है कि चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्रों के बाहर के स्थानों में जल की बर्फ उपस्थिति हो सकती है।

### परिचय

- निष्कर्ष चंद्रमा की सतह की संरचना और विकास के बारे में जानकारी देते हैं।
  - व्यावहारिक निहितार्थों में भविष्य के मानव मिशनों के लिए तापमान-नियंत्रित आवास बनाने की क्षमता सम्मिलित है।
- ध्रुव की ओर 14 डिग्री से अधिक ढलान वाले उच्च अक्षांश वाले क्षेत्रों में जल-बर्फ की उपस्थिति के लिए ध्रुवीय क्षेत्रों जैसी स्थितियां हो सकती हैं।
  - ये क्षेत्र अन्वेषण के लिए चरम ध्रुवीय क्षेत्रों की तुलना में अधिक सुलभ हो सकते हैं।

### ChaSTE

- यह एक थर्मामीटर है जिसने प्रथम बार ध्रुवीय क्षेत्रों के पास चंद्रमा की सतह और उप-सतह का ऑन-साइट तापमान माप किया।
- इसने चंद्रमा की सतह और उसके ठीक 10 सेमी निचली परत के बीच लगभग 60 डिग्री सेल्सियस का महत्वपूर्ण तापमान अंतर प्रकट किया, जिससे चंद्रमा की सतह की अत्यधिक गैर-चालकता पर प्रकाश डाला गया।

Source: IE

## SIPRI रिपोर्ट(2020-24)

### संदर्भ

- स्वीडन स्थित स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) के अनुसार, 2020-24 की अवधि में यूक्रेन प्रमुख हथियारों का विश्व का सबसे बड़ा आयातक बन गया।

### परिचय

- शीर्ष पाँच हथियार आयातक:** यूक्रेन, भारत, कतर, सऊदी अरब और पाकिस्तान।
  - इन पाँच देशों ने वैश्विक हथियार आयात का 35 प्रतिशत भाग लिया।
- शीर्ष पाँच हथियार निर्यातक:** अमेरिका, फ्रांस, रूस, चीन और जर्मनी।
  - इन निर्यातकों ने कुल वैश्विक हथियार निर्यात में 72 प्रतिशत का योगदान दिया।
- अमेरिका ने वैश्विक हथियार निर्यात में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर 43 प्रतिशत कर ली, जबकि रूस के हथियार निर्यात में 64 प्रतिशत की गिरावट आई।
- 2020-24 में वैश्विक हथियार निर्यात में चीन की हिस्सेदारी 5.9 प्रतिशत थी, जो 2015-19 में इसकी हिस्सेदारी से थोड़ी गिरावट है।

### भारतीय परिदृश्य

- भारत 2020-24 के दौरान विश्व का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक था।
- हालाँकि, 2015-19 और 2020-24 के बीच इसके आयात में 9.3 प्रतिशत की कमी आई।
- भारतीय हथियारों के आयात का सबसे बड़ा हिस्सा (36 प्रतिशत) रूस से आया, जो 2015-19 (55 प्रतिशत) और 2010-14 (72 प्रतिशत) की तुलना में काफी कम हिस्सा है।
- भारत ने फ्रांस के साथ 36 राफेल जेट और छह स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बियों सहित प्रमुख सैन्य सौदे किए हैं।

### स्टॉकहोम अंतराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान (SIPRI)

- SIPRI एक स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय संस्थान है जो संघर्ष, शस्त्रीकरण, शस्त्र नियंत्रण और निरस्त्रीकरण पर शोध के लिए समर्पित है।
  - यह स्टॉकहोम, स्वीडन में स्थित है।
- 1966 में स्थापित, यह शोधकर्ताओं, मीडिया एवं इच्छुक जनता को डेटा, विश्लेषण और सिफारिशें प्रदान करता है।

Source: TH

## पैरा-एथलेटिक्स ग्रैंड प्रिक्स

### समाचार में

- भारत जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में विश्व पैरा-एथलेटिक्स ग्रैंड प्रिक्स की मेजबानी करेगा।

### विश्व पैरा एथलेटिक्स ग्रैंड प्रिक्स के बारे में

- यह विश्व पैरा एथलेटिक्स द्वारा आयोजित शीर्ष ट्रैक और फील्ड प्रतियोगिताओं की एक वार्षिक शृंखला है, जो अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (IPC) का एक प्रभाग है।
- 2013 में स्थापित, ग्रैंड प्रिक्स का उद्देश्य दुनिया भर के पैरा-एथलीटों के लिए उच्च-स्तरीय प्रतिस्पर्धी अवसर

प्रदान करना है, जिससे उन्हें विश्व चैंपियनशिप और पैरालंपिक खेलों जैसे प्रमुख आयोजनों के लिए तैयारी करने में सुविधा हो।

- यह पैरा-एथलेटिक्स कैलेंडर की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है क्योंकि यह पैरा-एथलीटों के लिए खुद को सही खेल वर्ग में वर्गीकृत करने के लिए मंच के रूप में कार्य करता है।
- वर्गीकरण हो जाने के बाद, पैरा-एथलीट अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में खेलने के लिए पात्र हो जाता है।

Source: IE

